1

707

दृष्टि The Vision

drishti

# Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

## Essay

| | | | |
|---|---|---|---|
| **Name of Candidate:** AJAY KUMAR | | **Subject/Code:** | |
| **UPSC Roll No:** 083 58 47 | | **Date:** | 05/09/2024 |
| **Drishti Id:** | | **E-mail Id:** | |
| **Centre:** M.N. 707 | | **Medium:** | Hindi |

**Test Code: Essay-09**

*Time allowed: Three Hours* | *Maximum Marks: 250*

| (To be filled by Evaluator only) | | |
|---|---|---|
| | **Max. Marks** | **Marks Obtained** |
| | **(Essay Topic No.)** | **(Marks)** |
| **Section-A** | | |
| **Section-B** | | |
| **Total** | | |
| **Overall Feedback** | | |

**INSTRUCTIONS**

***कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:***

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

| For Student Only | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Time Taken | Start Time: | End Time: | Student Signature | |
| Mode of Examination | Online ☐ | Offline ☐ | | |

| For Office Use Only | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Evaluators Code | Evaluator Sign | Evaluation Date | Reviewers Code | Reviewers Sign |
| | | | | |

| Feedback | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Sr. No | मापदण्ड/Parameters | Max. Marks | Section-A (Essay-1) | Section-B (Essay-2) |
| 1. | **परिचय:** विषय और संलग्रता की स्पष्टता।<br>**Introduction:** Clarity of theme and engagement. | 10 | | |
| 2. | **विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग।<br>**Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence. | 25 | | |
| 3. | **संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता।<br>**Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas. | 20 | | |
| 4. | **प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन<br>**Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation. | 20 | | |
| 5. | **भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति<br>**Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation | 20 | | |
| 6. | **निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश।<br>**Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion. | 10 | | |
| 7. | **मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता।<br>**Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression. | 20 | | |
| | **कुल: Total:** | 125 | | |

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject** of the essay to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*



Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

**Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each:** **(125 × 2 = 250)**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

**खंड-A/SECTION-A**

**Topic:**

अपने सिद्धान्तों के लिए लड़ना हमेशा ही उन पर जीने से आसान होता है।

"इंसान द्वारा अपनी सोच, शब्दों व कार्यों में एकरूपता रखना ही वास्तविक खुशी का राज है।"

महात्मा गांधी

गांधीजी के द्वारा इस पंक्ति के माध्यम से आदर्श व यथार्थ की साम्यता के बारे में बताया गया है। आदर्शों का निर्धारण एक कड़ी है, परंतु इन आदर्शों का पालन करते हुए सच्चे यथार्थ तक पहुंचना एक अन्य विषय है। दोनों आदर्श या सिद्धान्तों की



641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हासिल करना व फिर उन सिद्धांतों पर चलते हुए जीवन की सार्थकता सिद्ध करना ही जीवन यात्रा है। परंतु यहां प्रश्न यह है कि क्या इंसान के स्तर पर या देश, दुनिया के स्तर पर हम इन सिद्धांतों के लिए लड़ पाते हैं? अगर लड़ भी लिए तो क्या हम उन पर चल पाते हैं?

यहां पर बायजू रविंद्रन की कहानी स्मरणीय है जिसमें हम पाते हैं कि कैसे लंबे संघर्ष के बाद वो एक अद्भुत सफलता तक पहुंचते हैं। इसी सफलता के आधार पर वो सिद्धांतों का बखान करते थे कि कैसे वो यहां तक पहुंचे, परंतु जैसे-जैसे समय की गति आगे बढ़ी, वैसे-वैसे सिद्धांतों का पालन मुश्किल होता गया। फीफा वर्ल्डकप की स्पॉन्सरशिप के 30 मिलियन डॉलर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पैसों की पूर्ति के लिए कॉर्पोरेट सिद्धांतों को त्याग अवैध तरीकों में संलग्न हो गए, परिणामतः पतन की ओर अग्रसर हुए। इस कहानी से हमें सिद्धांतों को हासिल करना व फिर उन पर चलने के बीच द्वंद का अच्छा उदाहरण मिलता है। वास्तव में निबंध शीर्षक यहां साबित हुआ कि आदर्शों के लिए लड़ना आसान है परंतु चलना बहुत मुश्किल है।

अगर एक इंसान के बारे में पता लगाने के लिए यह जाँचा जाता है कि उसकी कथनी और करनी में कितना अंतर है। इंसान के साथ-साथ इसे हम वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे पर लागू कर सकते हैं। बांग्लादेश का उदाहरण सामने है जहां लंबे संघर्ष के बाद आजादी हासिल की परंतु समय के साथ संविधान के आदर्शों का पालन त्याग दिया गया व



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसका परिणाम हमारे सामने है। एक समाज के स्तर पर हमें 18वीं सदी से लंबे नारीवादी आंदोलन चलाए, उनके अधिकारों की मांग की। लंबे संघर्ष के बाद उन्हें अधिकार व समाज में गरिमा हासिल हुई परंतु आज की बंगाल डॉक्टर की हत्या जैसी घटनाएं ना केवल हमारे सिद्धांतों को बल्कि हमारी अंतरात्मा को भी झकझोरने का काम करती हैं।

विषय में आगे बढ़ते हुए सोचने का विषय यह है कि सिद्धांतों के साथ जीना मुश्किल क्यों है? एक अन्य प्रश्न यह भी है कि क्या सिद्धांतों की वास्तव में आवश्यकता है? यहां पर हमारे सामने चिंतक जीन जैक रूसो के विचार



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है जो खुले तौर पर सिद्धांतों का विरोध करते हैं। उनका मानना है कि आदर्श रूपी जीवन जीने की इच्छा ने समाज में कृत्रिमता को बढ़ावा दिया है। इंसान का मूल रूप इससे छीन जाता है। इंसान को वास्तव में भावावेश के साथ जीना चाहिए"

लेकिन रूसो के विचारों को आधार बनाकर रोबेस्पियर जैसे खतरनाक नेता बनते हैं जो मानव जाति को खतरे में डाल देने का काम करते हैं। वास्तव में समाज में, जीवन में सिद्धांतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये वे आदर्श या मूल्य हैं जो हमारे जीवन को दिशा देने का काम करते हैं?

लेकिन सिद्धांतों का पालन भी मुश्किल नहीं है। सिद्धांतों के क्षरण का मुख्य कारण बढ़ती समाज की सुभेद्यता, भौतिकतावाद व नैतिक मानकों का त्याग देना है।

सिद्धांतों का स्रोत हमारे सामने


drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दार्शनिक विचार, नैतिक मूल्य, आचरण के नियम यथा सिविल सेवा आचरण नियम, 1964 आदि हैं। जब हम इनका सही ढंग से पालन करना छोड़ देते हैं तो व्यवस्था में गड़बड़ हो जाती है। वहीं सही ढंग से पालन करने पर इंसान बुद्ध व गांधीजी के मार्ग पर चल पड़ता है।

हमारे पास ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं जिनमें सिद्धांतों को हासिल भी किया व उनको सही ढंग से पालन भी किया। वास्तव में टाटा कंपनी की शुरुआत से लेकर अभी तक के सफर में हम देख सकते हैं कि औपनिवेशिक दबाव के बीच खड़ी गई इस कंपनी ने सफलतापूर्वक अपने मानकों का पालन किया व लोगों के कल्याण में आज भी कार्यरत हैं। समाज में विश्वास हासिल करने व जीवन की सार्थकता हासिल करने के लिए



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपने सिद्धांतों से समझौता न करना हमें निरंतर सही दिशा में ले जाता है।

अगर सही तरीके से विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि सिद्धांतों को पाना व उनके साथ जीवन जीना दोनों ही मुश्किल है। चारों ओर फैली निराशा व स्वार्थी नकारात्मक संसार में अपने आदर्शों को हासिल करना भी उतना ही मुश्किल है जितना कि इन पर चलकर आगे बढ़ना। रास्ते में अनेक बाधाएं आती हैं। महात्मा बुद्ध के उदाहरण से भी देख सकते हैं ज्ञान प्राप्ति के लिए उन्होंने कितना लंबा संघर्ष किया व ज्ञान प्राप्ति के बाद समाज में लोगों को सुधारने के लिए रूढ़िवादिता से भी उतना ही कठोर संघर्ष किया।

परंतु हमें इससे सीख लेनी चाहिए कि नकारात्मकता ही नकारात्मकता को नहीं मिटा सकती है व बाधाएं



Copyright – Drishti The Vision Foundation

सिखाने का काम करती है। सिद्धांतों का त्याग किसी भी परिस्थिति में नहीं करना चाहिए क्योंकि

जितने कष्ट कंटकों में है जिसका जीवन सुमन खिला,
गौरव गंध उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला।

अगर हम अपनी सोच को बदल लेते हैं तो हम पाएंगे कि सिद्धांतों को जाना व उनके अनुसार जीवन जीना दोनों ही सरल कार्य हैं व हमें सफलता के रास्ते पर ले जाते हैं। एक राष्ट्र के तौर पर हमने एकजुट होकर स्वतंत्रता पाई व देश संचालन के मानकों को तय किया, व तमाम 75 वर्षों की बाधाओं, सुखों - दुखों का सामना करते हुए हम आज विकसित भारत के गौरव पथ पर अग्रसर हैं।

मानवीय जीवन में मदर टेरेसा, मलाला


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

युसुफजई जैसे लोग हुए हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन मानवता के कल्याण में समर्पित कर दिया है। यहां हमें इंदिरा गांधी जी के अंतिम भाषा को याद करना चाहिए, "मुझे चिंता नहीं है मैं जीवित रहूं या ना रहूं। लेकिन मेरे लिए गर्व की बात यह है कि मेरा सारा जीवन लोगों के कल्याण के लिए समर्पित रहा है।"

वास्तव में सिद्धांत ही है जो जीवन का निर्माण करते हैं व उसकी दिशा को निर्धारित करते हैं। एक लोक सेवक के रूप में हम सिद्धांतों का पालन कर के V.K. मेनन बन सकते हैं जिन्होंने राष्ट्र के एकीकरण व शरणार्थी पुनर्वास में अहम भूमिका निभाई या किरण बेदी भी बन सकते हैं जिन्होंने जेल सुधार के महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। परंतु सिद्धांतों के त्याग पर सारदा कैडर की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

IAS पूजा सिंघल भी बन सकते हैं जिन्होंने करोड़ों रु का कालाधन जमा कर के लोगों के स्टीलफ्रेम पर विश्वास हनन का काम किया।

आज 21वीं सदी में आगे बढ़ते हुए हमारे पास कई क्षेत्रों में विस्तार के अवसर हैं। अगर हम सिद्धांतों के पालन से इन पर काम करते हैं तो भविष्य हरा ही हरा होगा। इसमें सबसे बड़ा मुद्दा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का है। गांधी जी के सात पापों में शामिल "मानवता बिना विज्ञान" के आदर्श पर कार्य कर के हम इन तकनीकों को कल्याणकारी बनाकर भविष्य की पीढ़ियों के जीवन को आसान बना सकते हैं।

ठीक इसी प्रकार पर्यावरण के स्तर पर उत्तरदायी उपभोग व उत्पादन के सतत विकास लक्ष्य 12 का पालन कर के पृथ्वी



Copyright – Drishti The Vision Foundation

को लंबे समय तक धारणीय बना सकते हैं। आज हमें 'There is only one Earth' के महत्व को समझने की आवश्यकता है।

समाज के स्तर पर सिद्धांतों का निर्माण व पालन भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पर विचार का मुद्दा यह भी है कि सिद्धांत कैसे हो होने चाहिए? हरियाणा में खाप पंचायतों के भी सिद्धांत हैं जो लंबे समय के साथ बने हैं। परंतु हमें अच्छे सिद्धांतों के साथ रूढ़िवादी सोचानों को तोड़ने की आवश्यकता है। इसके साथ-साथ नारी सम्मान, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय, बंधुता जैसे आदर्शों का पालन करते हुए मजबूत सामाजिक पूंजी निर्माण की आवश्यकता है।

अब एक इंसान के तौर पर हमारा ये दायित्व बनता है कि हम किस प्रकार निजी जीवन व एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपने सिद्धान्तों पर खरा उतरते हैं। यहां पर सभी लोगों को अपनी दायित्व निभाने की आवश्यकता है। अन्यथा कहीं कवि का व्यंग्य सही साबित न हो जाए कि "फुरसत तो मुझे भी बहुत थी देश के लिए पर जब मेरा पेट भर गया तो मुझे नींद आ गई।"

जीवन में नित नई ऊंचाईयों को छूने व आदर्शों और लक्ष्यों की प्राप्ति की इस यात्रा में हमें नैतिकता के उच्च, स्वर्णिम मानकों का पालन करना आवश्यक है। यही हमारे भविष्य का निर्धारण करेगा कि हम आज किस तरह से अपने संसाधनों व समय का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए सिद्धान्तों को हासिल करना शुरुआत में थोड़ा मुश्किल हो सकता है परंतु एक बार सही ऊर्जा की


Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्राप्ति से जो हमारे आदर्शों का निर्माण होगा। उन्हीं आदर्शों से हमारी अभिवृत्ति बनेगी, अभिवृत्ति से आदत। आदत से मूल्य, मूल्यों से चरित्र और चरित्र से हमारे भाग्य का निर्माण होगा।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है
श्रांत भवन में टिके रहना
किंतु जाना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

## Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Topic:

स्वीकार्यता स्वतंत्रता का अवरोधक और विकास का शत्रु है।

2014 की घटना है हरियाणा राज्य में जाति विशेष का आरक्षण आंदोलन चरम पर था। प्रशासनिक व्यवस्था विफल हो चुकी थी। लगातार आगजनी, प्रतिरोध व सरकारी संपत्ति को जलाने का अभियान चलाया जा रहा था। किसी तरह सरकार व विरोधी पक्ष में सहमति बनी और आंदोलन रोक दिया। चूंकि आंदोलन में राज्य को 44000 करोड़ का नुकसान हुआ था तो जांच के लिए आयोग का गठन किया गया। आयोग की जांच में सामने आया कि सिविल सेवकों ने स्थिति



Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थानी स्वीकार करते हुए कोई भी नवाचार या शांति की उम्मीदों को त्याग दिया और राज्य को जलने का तमाशा देखते रहे।

संबंधों में हिंसा की ऐसी स्वीकार्यता ने ना केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक जन जीवन को भी बाधित कर दिया व लंबे समय से विकासपथ पर अग्रसर राज्य की गति को भी बाधित कर दिया। इस तरह की स्वीकार्यता वास्तव में स्वतंत्रता के लिए बाधक व विकास के लिए शत्रु बन कर उभरती है।

ऐसे ही एक अन्य उदाहरण भी देखा जा सकता है जिसमें एक रिपोर्ट में बताया गया था कि दो तरह के भ्रष्टाचार चलते हैं एक बलपूर्वक एक आपसी सहमति से। सहमति वाला तरीका ज्यादा चलन में है। इसका एक ही कारण है कि हमारे समाज ने रिश्वत जैसे अपराधों

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

को स्वीकार कर लिया है। हालांकि इसमें नौकरशाही निरकुंशता, सजा तंत्र की खराबी, अच्छी शिकायत निवारण प्रणाली का न होना भी एक कारण है परंतु इंसान के तौर पर भी अपने उत्तरदायित्व से भागते हुए भेड़चाल चलना हमारी कमजोरी को साबित करता है।

व्यक्तिगत जीवन में भी हमें ऐसे हताशा के अवसर मिलते हैं जब इंसान अपनी किस्मत पर पूरा ठिकरा फोड़ कर जीवन में हताश निराश होकर बैठ जाता है। स्वीकार्यता का यह भाव हार को प्रदर्शित करता है। इस तरह हाथ खड़े कर देना न केवल जीवन गति को बाधित करता है बल्कि अवसाद में आत्महत्या जैसी बुराई को भी बढ़ावा देता है।

विषय में सोचने का विषय यह है कि क्या ऐसे स्वीकार्यता का भाव के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जैसे डर अन्याय को सहना अच्छा है। इसका जवाब है नहीं। जीवन की कठिनाईयों, समस्याओं को इस तरह बस बना देना इंसान की वीरता का प्रमाण नहीं है। हमारे पास महाराणा प्रताप जैसे आदर्श उदाहरण हैं जो किसी भी परिस्थिति में हार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और संघर्ष जारी रखते हैं-

युद्ध कब तक टाला जाए
द्वंद कब तक पाला जाए
तू भी है राणा का वंशज
फेंक जहां तक भाला जाए।

अगर हम किसी भी तरह के अन्याय को स्वीकारते हैं व उसे यथास्थिति में छोड़ देते हैं तो वह आक्रांता की ईच्छा को बढ़ाने का काम करता है। व्यक्तिगत जीवन में ऐसा भाव रहेगा तो हम कुछ भी नया हासिल नहीं कर पाएंगे वहीं



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सामाजिक जीवन में ऐसी स्वीकार्यता अपराध को निरंतर बढ़ावा देगी। ब्रिटिश राज में जहां कुछ लोगों ने गुलामी को स्वीकार किया तो कुछ लोगों ने प्रतिरोध का रास्ता अख्तियार किया। भगत सिंह ने कहा है- "समाज में बुराई इसलिए नहीं बढ़ रही कि बुरे लोग बढ़ रहे हैं, बल्कि इसलिए बढ़ रही क्योंकि बुराई को सहने वाले लोग बढ़ रहे हैं।"

लेकिन विषय में आगे बढ़ते हुए एक प्रश्न यह भी है कि क्या हमेशा स्वीकार्यता का भाव स्वतंत्रता का अवरोधक व विकास का शत्रु होता है? इसका जवाब भी नहीं ही होगा। जीवन में कुछ चीजों को स्वीकार करना भी जरूरी है ताकि जटिलता में कमी आए और जीवन सरल हो। सर्वप्रथम तो इसमें अभिरुचि का विषय है कि अगर किसी विषय में हमारी क्षमता नहीं है, तमाम प्रयास करने के



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भी कोई बदलाव नहीं आ रहा तो लोमड़ी की "अंगूर खट्टे हैं" की कहावत पर को स्वीकार कर लेना चाहिए। हमारा गला लता मंगेशकर जैसा नहीं है तो मान लेना चाहिए कि हमारे अंदर वो क्षमता नहीं है कि उस क्षेत्र में लता जी जितना सफलता हासिल करें तो हमें नए क्षेत्र में अपने कौशल को आजमाना चाहिए।

ऐसे ही निजी जीवन में आपसी रिश्तों के बीच ही द्वंद्व चल रहा हो तो हमें वहां पर भी पीछे हटकर स्थिति को संभालने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि कहा भी गया है 'अपनों से प्रतिस्पर्धा में हम जीतकर भी हार जाते हैं।' ऐसी स्थिति में हमें सत्य को स्वीकार कर, संतुलन की कोशिश करनी चाहिए। क्या पता बस अहं भाव को त्याग व छोटी सी हार को स्वीकार हम वर्षों के रिश्तों को बचा लें जाए व तलाक जैसी घटनाओं में



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कमी आने लगी।

किसी भी क्षेत्र में असफलता को स्वीकारना भी कुशलता का एक रूप है क्योंकि इसके द्वारा हमें सीखने के जो सबक मिलते हैं वे भविष्य के लिए लाभदायी होते हैं। चर्चिल का मानना है:- "सफलता कोई अंतिम जीत नहीं और असफलता कोई ~~अंतिम हा~~ हार नहीं, निरंतर प्रयास करना ही मायने रखता है।"

विश्लेषण में आगे बढ़ते हुए एक मुद्दा यह भी है कि किन चीजों में कभी भी स्वीकार्यता का भाव नहीं आना चाहिए। जब हमारे उसूलों पर, मूल्यों, आदर्शों पर बात आए तो हमें कभी भी इनसे खिलवाड़ को स्वीकार नहीं करना चाहिए। मूल्यों से खिलवाड़ अक्सर हमें पतन की ओर ही ले जाता है। नैतिकता का पालन जब हम त्याग देते हैं तो फिर समस्याएं विकराल रूप लेने लगती हैं, इसलिए


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सिद्धांतों पर चलना चाहिए क्योंकि
उसूलों पर आंच आए तो टकराना जरूरी है,
अगर जिंदा हैं तो जिंदा नजर आना जरूरी है।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि स्वीकार्यता का भाव दोनों ही रूपों में सार्थक साबित हो सकता है, बशर्ते हमें जानकारी हो कि हमें क्या करना है। जीवन में इतनी जटिलता नहीं होनी चाहिए कि बाहर की हवा अंदर ही न आ सके। इसी के लिए महात्मा बुद्ध के द्वारा "मध्यम मार्ग" सुझाया गया है। अब यह हम पर निर्भर है कि स्वीकार्यता के भाव को हम किस तरह और किस दिशा में प्रयोग करते हैं।

इसी तरह एक यहां विषय यह भी आता है कि जीवन में कुछ चीजें



Copyright – Drishti The Vision Foundation

सार्वभौमिक सत्य होती है। अगर इस धरती पर हमने जन्म लिया है तो हमें हर उस परिस्थिति से टकराने के लिए तैयार रहना चाहिए जो भविष्य में आने वाली है। यहां पर मदर इंडिया (1957) में इस फिल्म के गीत से भी सीख सकते हैं कि जीवन निरंतर संघर्ष व चलने का नाम है-

दुनिया में अगर आए हैं तो जीना ही पड़ेगा,
जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा।

परन्तु ऐसी स्थिति में आदर्श कार्य यह नहीं है कि परिस्थितियों के प्रति स्वीकार्यता का भाव लाकर थक कर बैठ जाए बल्कि यहां हमें 'लोंगो थेरेपी' के कॉनसेप्ट को अपनाने की आवश्यकता है। यह एक यहूदी मनोवैज्ञानिक द्वारा तैयार की गयी प्रणाली है। यह वह हिटलर द्वारा यातना कैंप में कैद कर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिया गया था जहां माता-पिता, पत्नी सभी की मृत्यु हो गई। परंतु इन्होंने अपनी जीजीविषा को जिंदा रखा और जिंदा बचकर बाहर लौटे। इनका कहना है:- हम यह नहीं निर्धारित कर सकते कि जीवन में किसी तरह के सुख या दुख आयेंगे, परंतु उनका प्रयोग हम सकारात्मक सोच के साथ भविष्य को निर्देशित करने में अवश्य कर सकते हैं।

अतः इंसान के तौर पर परिस्थितियों से जूझना व स्वीकार्यता के भाव से पार पाते हुए नवाचारी कदम आगे बढ़ाना वास्तव में सार्थकता को बढ़ावा देगा। हमें अपनी क्षमताओं को निरंतर पुश करते हुए आत्मप्रेरणा से आगे बढ़ने की कोशिश जारी रखनी चाहिए। जीवन में रिस्क लेने वाला



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तत्त्व हमारे व्यवहार में होना चाहिए क्योंकि किनारे पर बैठ कर हम समुद्र की गहराईयों को नहीं नाप सकते। समुद्र में उतरकर वहां कठिनाईयों से संघर्ष कर के ही हम सफलता रूपी मोती को प्राप्त कर सकते हैं जो आत्मसंतुष्टि का कारण बनेगा। अतः स्वीकार्यता के भाव का सही प्रयोग ही हमें असीम ऊंचाईयों तक पहुंचने में सहायक साबित होगा।

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में ऊंचा नाम करो।



drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

# Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपराध का स्वीकार → प्रकट सहे
→ कुछ मूल्यों से खिलवाड़
→ संघर्ष के लिए पुकारई

स्वीकार्यता स्वतंत्रता का अवरोधक है
के विकास का शत्रु है।

जीवन में हार स्वीकारना
अपनी अभिरुचि को स्वीकारना
कार्य करना — अवसाद में न जाना ✓

खुद की इच्छा पूरा करो give target, पॉसिबल to yourself.

जीना है तो शौकों को पूरा करें
Risky life

जरूरी न निराश करें मन को



641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

चूंकी हम भावी पीढ़ी के बारे में नहीं सोचते, इसलिए वे हमें कभी नहीं छोड़ेंगे

why we create pollution, destroy Economy, Polity, Society, AI, ethics समस्या

कितनी चाहिए की नहीं? नहीं — ट्रिलियन डॉलर... फिर प्रश्न

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भावी पीढ़ी के बारे में नहीं सोचते — सतत विकास? समस्या

So गलती... these will be results

but अच्छा सोचते हैं

हम सोचते हैं — toward earth, to live new ... world

भविष्य की पीढ़ी? के मानक निर्धारित

समाज सुधार, राजनीति, न्याय, समानता, बंधुता

चूंकी हम भावी पीढ़ी के बारे में नहीं सोचते इसलिए वे हमें कभी माफ नहीं करेंगी

स्वीकार्यता स्वतंत्रता का अवरोधक है — जीवन की स्वतंत्रता — विकास का शत्रु है?

(सिविल सर्विस 44000 crore ...)

No → प्रवृत्ति changes; कुछ परिस्थिति स्वीकारना; जिम्मेदारी; असफलता; ... नहीं मानना चाहिए

स्वीकारना → भ्रष्टाचार, अपराध, जीवन की इच्छाशक्ति; अंतरराष्ट्रीय conflict; स्वीकारना मतलब हार मानना ... मरना।



drishti — 641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation